भगवान महावीर और जैन धर्म की महत्ता और वर्तमान विश्व में प्रासंगिकता

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS College Saharsa

भगवान महावीर का जीवन और जैन धर्म समकालीन दुनिया के लिए महत्वपूर्ण सीख है. हम इस पोस्ट में भगवान महावीर और जैन धर्म की महत्ता और समकालीन विश्व में इसकी प्रासंगिकता को सरल रूप में समझेंगें. वर्तमान में जैन धर्म और महावीर की शिक्षा कितनी प्रासंगिक है?

- जैन धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई तथा इसका दर्शन क्या है
- बौद्ध धर्म के उदय के कारण से लेकर महात्मा बुद्ध की शिक्षा एवं दर्शन

भगवान महावीर पृथ्वी के सबसे उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरुओं में से एक थे. इनका जीवन और जैन धर्म के दर्शन में समकालीन दुनिया के लिए महत्वपूर्ण सीख है. हमारे समय के गंभीर सवालों के कुछ जवाब भगवान महावीर के दर्शन, सिद्धांतों और शिक्षाओं में प्राप्त हो सकते हैं.

जैन धर्म ने भारत के आध्यात्मिक विकास में महान योगदान दिया और सत्य, अहिंसा और शांति के आदर्शों के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता को मजबूत करने में मदद की है. भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और सार्वभौमिक करुणा के संदेशों ने सच्चाई और ईमानदारी का मार्ग प्रशस्त किया.

भगवान महावीर के उपदेशों की आध्यात्मिक रोशनी और नैतिक गुण सभी लोगों को शांति, सद्भाव और मानवता के लिए, प्रगति के प्रयास के लिए प्रेरित करते रहे है.

जैन धर्म ने भारत के आध्यात्मिक विकास में बहुत योगदान दिया है. भारत दुनिया की सांस्कृतिक राजधानी था, जो प्रेम, शांति, सहिष्णुता और भाईचारे के उच्चतम मानवीय मूल्यों और गहन ज्ञान और ज्ञान का स्रोत और दुनिया के लिए विश्वगुरु था.

जैन धर्म की शिक्षा में वर्तमान विश्व के संदर्भ में निम्न तत्व ज्ञान समाहित है.

वर्तमान समय में अराजकता भरी पड़ी है. जहाँ एक ओर दुनिया आतंकवाद, उग्रवाद और गृहयुद्धों जैसे कई रूपों में हिंसात्मक लड़ाई लड़ रही है वहीं दूसरी ओर संसाधनों के अनियंत्रित दोहन, असंतुलित और निम्न ढंग से बनाई गई विकास योजनाओं के दुष्परिणामों से जूझ रही है. ऐसे में हमें या तो अपने जीने के तरीके को बदलना होगा या अपने कार्यों के अपरिहार्य परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा.

सामाजिक व्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों के मामले में हमें जो कुछ भी विरासत में मिला है, हम केवल उसके संरक्षक हैं. यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें सर्वश्रेष्ठ परिस्थितियों में अपनी संतति को सौंपें जिससे कि जीवन की निरंतरता के लिए बाधित न हो.

हमें प्रकृति के प्रचुर संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को रोकना चाहिए तथा अपने जीवन जीने के तरीके में संयम लाना चाहिए. अत्यावश्यक मुद्दों के समाधान के लिए लोगों को आत्मनिरीक्षण करने और प्राचीन मूल्यों पर फिर से विचार करने और उनमें से सर्वश्रेष्ठ को पहचानने का समय है.

जैन दर्शन हमेशा प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने में विश्वास करता है. व्यक्ति को अपनी जड़ों की तरफ वापस जाना चाहिए और प्रकृति के साथ प्रेम करना और जीना सीखना चाहिए.

कुछ लोग देश और दुनिया के सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करने के लिए आतंकवाद में लिप्त हैं. ऐसे में जरूरत है की सभी देश एकजुट होकर आतंकवाद के खतरे से लड़ें. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व आज समय की आवश्यकता है.